राज
कॉमिक्स
संख्या 0230
उड़नतश्तरी के बंधक
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
सुपरकमांडो
ध्रुव
संस्थापक
श्रद्धांजलि
वर्ष 2021

सुपर कमांडो

ध्रुव

उड़नतश्तरी के बंधक

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

संपादन : मनीष चंद्र गुप्त

बम्बई से राजनगर की फ्लाइट ।314 अपने निश्चित समय पर राजनगर के एयरपोर्ट पर उतरने के लिए बढ़ रही थी–

चलो! कल से फिर वही स्कूल का रगड़ा, और होमवर्क का झगड़ा। बम्बई में मौसी के घर कितना मजा आ रहा था।

हर समय मजा मारने से काम नहीं चलता, श्वेता। कभी-कभी पढ़ना भी चाहिए।

कभी-कभी न? लेकिन यहां तो रोज वही खिट-खिट…।

?

बोलते-बोलते श्वेता के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आए।

क्योंकि रात के अंधेरे में सूर्य की तरह चमकती एक गोल वस्तु तेजी से प्लेन की तरफ बढ़ रही थी–

जिसका नाम सब को पता था–
य... यह तो... उड़नतश्तरी है।...
लेकिन... लेकिन... यह तो हमसे टकराने जा रही है।
बचाओ!

लेकिन उड़नतश्तरी प्लेन से टकराई नहीं। बल्कि उसमें से एक किरण निकल कर प्लेन से टकराई –
!!!!!!!
और आगे बढ़ता हुआ प्लेन हवा में ही रुक गया।

परंतु इससे पहले कि कुछ और होता, एक दूसरी गोल वस्तु अचानक हवा में प्रकट हुई–
और पहली उड़नतश्तरी की तरफ बढ़ने लगी।

अगले ही क्षण-यह स्पष्ट हो गया कि दोनों दोस्त नहीं हैं–

लेकिन पहली उड़न-तश्तरी, दूसरी के मुका-बले कहीं अधिक ताकतवर थी–

लड़ाई ज्यादा देर नहीं चली–
ब म
?

एक अंधा कर देने वाली चमक के साथ दूसरी उड़नतश्तरी तेजी से जमीन की तरफ बढ़ने लगी–

धूल और धुएं के बादल जमीन की सतह से आसमान को छूने के लिए ऊपर लपके –

और फिर - सब शांत हो गया–
-सिवाय एक चीख के।
आ!!!

लेकिन राजनगर-एयरपोर्ट पर हड़कंप मचा हुआ था–
हैलो! कॉलिंग 1314! हैलो! हैलो!
सर! फ्लाइट 1314 के साथ हमारा लिंक अचानक टूट गया है।

क्या? प्लेन की पोजीशन रडार पर चैक करो।
रडार पर भी प्लेन का कोई निशान नहीं है।
ओ माई गॉड! पायलट का आखिरी मैसेज क्या था?

सिर्फ एक शब्द, सर! उड़नतश्तरी!
उड़न तश्तरी?

दुर्भाग्यशाली प्लेन का यह आखिरी मैसेज कहीं और भी रिकॉर्ड हो गया था–
ध्रुव! ये मैसेज सुनो!
हैलो! हैलो! फ्लाइट 1314 कॉलिंग टू राजनगर एयरपोर्ट! एक उड़नतश्तरी... क्लिक!

फ्लाइट 1314? इस फ्लाइट से तो मम्मी और श्वेता आ रहे थे।
करीम, तुम प्लेन से संपर्क करने की कोशिश करो। मैं अभी आया।

और फिर राजनगर एयरपोर्ट पर –
...दुर्भाग्य से ये खबर सच है, ध्रुव!...
225 यात्रियों के साथ साथ फ्लाइट 1314 का कहीं कोई पता नहीं है।

कहीं प्लेन दुर्घटनाग्रस्त तो नहीं हो गया?
भगवान न करे, लेकिन इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।
यह हादसा यहां से लगभग 80 कि•मी• दूर पूर्व में हुआ है। रायपुर गांव के पास।

हमारा 'सहायता- दल' अब तक वहां पर पहुंच गया होगा। अगर प्लेन दुर्घटनाग्रस्त हो गया है, तो उसका मलबा वहां पर जरूर...
सर, 'सहायता- दल' वालोंका अभी- अभी मैसेज आया है।
क्या मैसेज है?

सिर्फ एक लाइन का, सर!...
...वहां पर दूर- दूर तक एक पेंच भी नहीं है।
धम्म्म
असंभव! एक जंबो जेट, 225 यात्रियों सहित ऐसे कैसे गायब हो सकता है?
उनसे छानबीन जारी रखने को कहो।

लेकिन पायलट के 'उड़नतश्तरी' कहने का क्या मतलब हो सकता है?
कुछ खास नहीं। रात की फ्लाइट में अक्सर ऐसे भ्रम हो जाते हैं। ऐसे मैसेज हम कई बार रिसीव कर चुके हैं।
लेकिन हर बार वह नजरों का धोखा ही निकला। कभी कोई गुब्बारा या कभी कोई बादल।

ठीक है, सर! लेकिन कुछ भी पता चलते ही मुझे तुरंत खबर करिएगा।
श्योर, ध्रुव! तुम चिंता मत करो।
हम छानबीन जारी रखे हुए हैं।
जल्दी ही कोई न कोई खबर जरूर मिलेगी।

बाहर निकलते समय ध्रुव के दिमाग में खल- बली मची हुई थी-
हो सकता है कि पायलट भ्रमित हो गया हो।
लेकिन अगर उसने वाकई कोई 'उड़न तश्तरी' जैसी चीज देखी हो तो?

लेकिन ध्रुव जब संभावित दुर्घटना-स्थल पर पहुंचा तो 'सहायता-दल' वाले वापस जाने की तैयारी में थे-

यहां पर रुकने का मतलब समय की बर्बादी है, ध्रुव!

प्लेन यहां पर कहीं भी नहीं है।

तो आखिर प्लेन गया कहां?

मेरे ख्याल से प्लेन में कुछ खराबी के कारण पायलट ने उसको कहीं और उतार दिया है, और जल्दी ही वह हमसे संपर्क स्थापित करेगा।

भगवान करे कि ऐसा ही हो।

लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ हो, तो क्या होगा?

और फिर-
वह है शामू, साहब! वैद्य जी इसको अभी-अभी काढ़ा पिलाकर गए हैं।
बचाओ!...बचाओ! ...हाय! चमकती थाली ...गिर पड़ी। ...हाय! हमें...जला दिया।...
चमकती थाली!?

हां, साहब! लगातार यही बड़बड़ाए जा रहा है! और वहां पर थाली तो क्या चम्मच तक नहीं गिरा है।
चमकती थाली। यह जरूर उड़नतश्तरी की बात कर रहा है।
लेकिन यह मामला तो उल्टा हो गया। प्लेन के बजाय उड़नतश्तरी ही गिर पड़ी। लेकिन अगर इसकी बात एक प्रतिशत भी सही है, तो वहां पर कुछ न कुछ गिरने का निशान जरूर होगा।
ध्रुव वापस खेतों की तरफ तेजी से भागा-
उड़नतश्तरी जैसी किसी चीज के गिरने से तो अच्छा खासा बड़ा गड्ढा हो जाएगा।
?
और उसके टकराने से जमीन भी काफी गर्म हो जाएगी।

...जैसे ये जगह।
यह गड्ढा अभी-अभी हुआ लगता है। यहां की जमीन भी काफी गर्म है।
अवश्य ही कोई भारी वस्तु यहां पर आकर जमीन से टकराई है।

लेकिन टकराने के बाद वह आखिर कहां... आह!
तभी ध्रुव का बदन किसी अदृश्य वस्तु से जा टकराया।
ओह! मैं किस चीज से टकराया था? यहां पर तो कुछ भी नहीं...। नहीं! यहां पर कुछ है।
थप्प
ध्रुव के बढ़े हाथ ने किसी चीज को छुआ।

और उसके अंदर कदम रखते ही उड़न-तश्तरी फिर से अदृश्य हो गई –

और साथ में ध्रुव भी।

इस यान में आपका स्वागत है, आदरणीय! मिसाटे आपको प्रणाम करता है।
?
आप तो काफी सभ्य लगते हैं और हमारी भाषा भी जानते हैं।
आप किस ग्रह से पृथ्वी पर आए हैं?
किस ग्रह से? हाहाहा हाहा!!
क्या मैंने कोई गलत बात कह दी?

नहीं, नहीं, आदरणीय! मैं किसी दूसरे ग्रह से नहीं आया। मैं भी, आपकी तरह ही, पृथ्वी का वासी हूं।
पृथ्वी के वासी!?
हां! फर्क सिर्फ इतना है कि हम आपके समय के अनुसार, सन 25,000 के हैं। हम भविष्य से आए हैं।

ध्रुव ने बहुत मुश्किल से अपने घूमते दिमाग पर काबू पाया–
स... सन 25,000 से!! यानि (गड़ब) आप 'समय-यात्री' हैं।
हां! हम, आप लोगों के वंशज हैं।
आप हमारे पूर्वज हैं। इसीलिए आप हमारे लिए आदरणीय हैं।
आश्चर्य की बात है। वर्ना अब तक तो हम यही समझते थे कि उड़नतश्तरियां किसी दूसरे ग्रह से आती हैं।
उड़न-तश्तरियां?
हां। आपके यानों को, गोल होने की वजह से, हम लोग 'उड़नतश्तरी' कहते हैं।

खैर, मैं इतिहास का विद्यार्थी तो हूं नहीं।
इसीलिए आपके युग के बारे में मेरी जानकारी काम-चलाऊ ही है।
दरअसल हम आप के युग में ही नहीं, और कई युगों में भी राज-कीय यात्रा पर आते रहते हैं, ताकि पृथ्वी की प्रगति पर नजर रख सकें।

यान में कुछ देर तक शांति छाई रही। ध्रुव शायद एक खतरनाक निर्णय लेने जा रहा था—

मिसाटे की नजरें ध्रुव पर टिकी हुई थीं।

आपको सही-सलामत इस युग में पहुंचा देने की जिम्मेदारी मेरी रही।... आप उस सीट पर बैठ जाइए।...

...और सबसे पहले उस पीले बटन को दबाइए।...

धीरे-धीरे मानव ज्यादा से ज्यादा मशीन पर निर्भर होते गए। फिर हमारी तकनीक इतनी उन्नत हो गई कि हम मनुष्यों और पशुओं के क्षतिग्रस्त अंगों को, धातुओं के कृत्रिम अंगों में बदलने लगे–

आज, यानि 25,000वीं सदी में हम शरीर का हर अंग बदल सकते हैं...

सिवाय *मस्तिष्क* के। जिन मानवों के शरीर में धातु के अंग लगे थे, वे 'मेक-मानव' कहलाने लगे। इस चिकित्सा या 'अंग-प्रत्यारोपण' का एक बुरा असर यानि 'साइड-इफेक्ट' भी होता है।

वह ये कि '*मेक मानवों*' में भावनाएं कम हो जाती हैं।

भावनाएं कम होने से *मेकमानव*, मानवों से अधिक क्रूर होते हैं। जिस मेक मानव के शरीर में धातु के जितने अधिक अंग होते हैं, वह उतना ही अधिक भावना-हीन और क्रूर होता है–

इस प्रकार हमारे समाज में एक दरार आती गई। मानव और मेकमानव में खाई बढ़ने लगी।

धीरे- धीरे स्थिति यह हो गई है, कि आज संसार दो भागों में बंट कर रह गया है। आधा संसार हम मानवों के अधीन है, और आधा मेक मानवों के कब्जे में है-

डिक्टेटर विटलर, मेक मानवों का एकछत्र राजा है। उसमें भावनाएं लगभग शून्य हैं।

क्योंकि मस्तिष्क के अतिरिक्त उसके शरीर का हर अंग धातु का है। इस कारण वह क्रूरता का जीता- जागता रूप बन गया है-

लेकिन आप लोगों के इस झगड़े में हमारे युग के लोग कहां से आ गए?
सीधी सी बात है। आप लोग हमारे पूर्वज हैं। ...
...और हमारी भावनाएं आप लोगों से जुड़ी हुई हैं। विटलर आप लोगों का अपहरण करके हम पर दबाव डालता है।

वह आप लोगों को खत्म करने की धमकी देता है। और अगर वह ऐसा करता है, तो हमारा पूरा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। क्योंकि जब हमारे पुरखे ही नहीं रहेंगे, तो हम कहां से पैदा होंगे? ...
...विटलर उन लोगों को तब तक बंधक बनाए रखेगा, जब तक हम मानव, मेक मानवों की अधीनता स्वीकार न कर लें।

ओह! अब हमारा यान एकदम सही बिन्दु पर है। आप उस 'नॉब' को घुमाकर 'ऑन' पर कर दीजिए।
ध्रुव ने नॉब को 'ऑन' पर घुमाया।

और 'उड़न तश्तरी' एक स्थान पर रुक कर भयंकर गति से घूमने लगी-

चारों तरफ अजीब-अजीब आकृतियां फैलने लगीं। शून्य गहरा से और गहरा होता गया-

और फिर धीरे-धीरे चारों तरफ फिर से तारे नजर आने लगे-
अरे, कुछ भी तो नहीं हुआ।
हम तो वहीं पर हैं, जहां से चले थे।

नहीं, आदरणीय! है तो यह पृथ्वी ही, परंतु सन् 25000 की। खैर, थोड़ी देर बाद आप खुद ही समझ जाएंगे।

उड़नतश्तरी तेज़ी से पृथ्वी की सतह की ओर बढ़ने लगी-

और थोड़ी देर बाद ध्रुव ने अपने आपको एक अद्भुत दुनिया में पाया-
स्वागत है, मिसाटे! तुम ठीक तो हो न? तुमसे अचानक संपर्क टूट जाने के कारण हम बहुत चिंतित थे।
लेकिन यह कौन है?
यह हमारे पूर्वज हैं, श्रीमान! इनकी मदद के बगैर मैं अपने युग तक कभी न आ पाता।
पूर्वज? क्या तुम भूल गए कि हमारे कानून...।
क्षमा चाहता हूं, श्रीमान! हम इनको अभी वापस भेजने का इंतजाम करते हैं।

नहीं! मैं उस 'हवाई-जहाज' के सभी यात्रियों को साथ लिए बगैर कभी वापस नहीं जाऊंगा। उन यात्रियों में मेरी मां और छोटी बहन भी हैं।
?

हम आपकी भावनाओं की कद्र करते हैं आदरणीय। लेकिन यह असंभव है।
मुझे असंभव को संभव करना आता है।

ये ठीक कह रहे हैं। अगर कोई विटलर की रही-सही बुद्धि को ठिकाने लगा सकता है, तो वह ये ही हैं।
आप इनको जानते हैं?
मैं ही क्या, इतिहास का हर विद्यार्थी इनको जानता है।

ये सुपर कमांडो ध्रुव हैं। बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी के सबसे महान योद्धा।
इनके नाम से ही उस समय के अपराधी थर-थर कांपते थे।

मैं तो इनके उन कारनामों के बारे में भी जानता हूं, जिनके बारे में ये खुद भी अभी नहीं जानते।
क्योंकि वे कारनामे इनको अभी करने बाकी हैं।

तब तो इनको ईश्वर ने ही हमारी सहायता के लिए यहां भेजा है।
आप लोग मेरी जितनी प्रशंसा कर रहे हैं, मैं उसके योग्य नहीं हूं।

लेकिन फिर भी मैं आप लोगों की सहायता करने की पूरी कोशिश करूंगा। विटलर तक तो कोशिश करके मैं पहुंच सकता हूं।...
...लेकिन उससे फायदा क्या होगा? विटलर के हटते ही कोई और मेक-मानव उसकी जगह ले लेगा।

और वह भी विटलर की तरह ही भावनाशून्य और क्रूर होगा।
नहीं! इस समस्या का इलाज भी हमने ढूंढ लिया है।
धातु के कृत्रिम अंग मेकमानवों के शरीर में एक खास हारमोन्स की मात्रा को कम कर देते हैं, जिससे मानवों में भावनाएं कम हो जाती हैं।

उस हारमोन्स को मेक मानवों के शरीर में प्रविष्ट कराते ही वे हमारे जैसे हो जाएंगे। लेकिन विटलर हमको ऐसा करने नहीं दे रहा है।
तो ठीक है। अब मुझे अपनी योजना बनाने के लिए कुछ जानकारी चाहिए।

आप जो कुछ भी चाहें, हमसे पूछ सकते हैं।
लेकिन मैं पूछूं क्या? कोई भी सफल योजना बनाने के लिए मुझे जो जानकारी चाहिए, उसे जानने में तो महीनों लग जाएंगे।
नहीं, आदरणीय! आप अपने युग के अनुसार ठीक कह रहे हैं, लेकिन हमारा तरीका 25,000 वीं सदी का है। आप मेरे साथ आइए।

और फिर–
इस मशीन को हम 'इंस्ट्रक्टर' कहते हैं। यह आपको, इस युग से संबंधित सारी महत्वपूर्ण सूचनाएं, कुछ मिनटों में ही दे देगा।
परंतु उस जानकारी का उपयोग आपको, अपने अनुसार ही करना होगा।
तैयार रहिएगा।

एक बटन दबा- और ध्रुव के दिमाग में सूचनाओं की बाढ़ उमड़ पड़ी–
और कुछ ही मिनटों में मशीन ने अपना काम खत्म कर दिया।

कमाल है! हमारे युग के लिए यह 'इंस्ट्रक्टर' जादू से कम नहीं है। इस मशीन का तो हमारे युग वालों को आयात करना चाहिए।
क्षमा चाहता हूं, आदरणीय! परंतु हमलोग भूतकाल या भविष्य-काल के युगों के साथ आयात-निर्यात नहीं करते।

सिवाय अपने पूर्वजों के आयात के। क्यों?
अ... अब मैं...
खैर! मैं तो सिर्फ मजाक कर रहा था।
अब मुझे सिर्फ एक चीज और चाहिए।...

... उस हारमोन्स से भरा एक हाई पावर कैप्सूल, जो मेकमानवों में फिर से कोमल भावनाएं जगाकर, उनको क्रूरता से छुटकारा दिलाता हैं।

दो दिन बाद – मेकलैंड के 'रॉकेट पोर्ट' की कड़ी सुरक्षा के बीच एक यान आ कर उतरा–
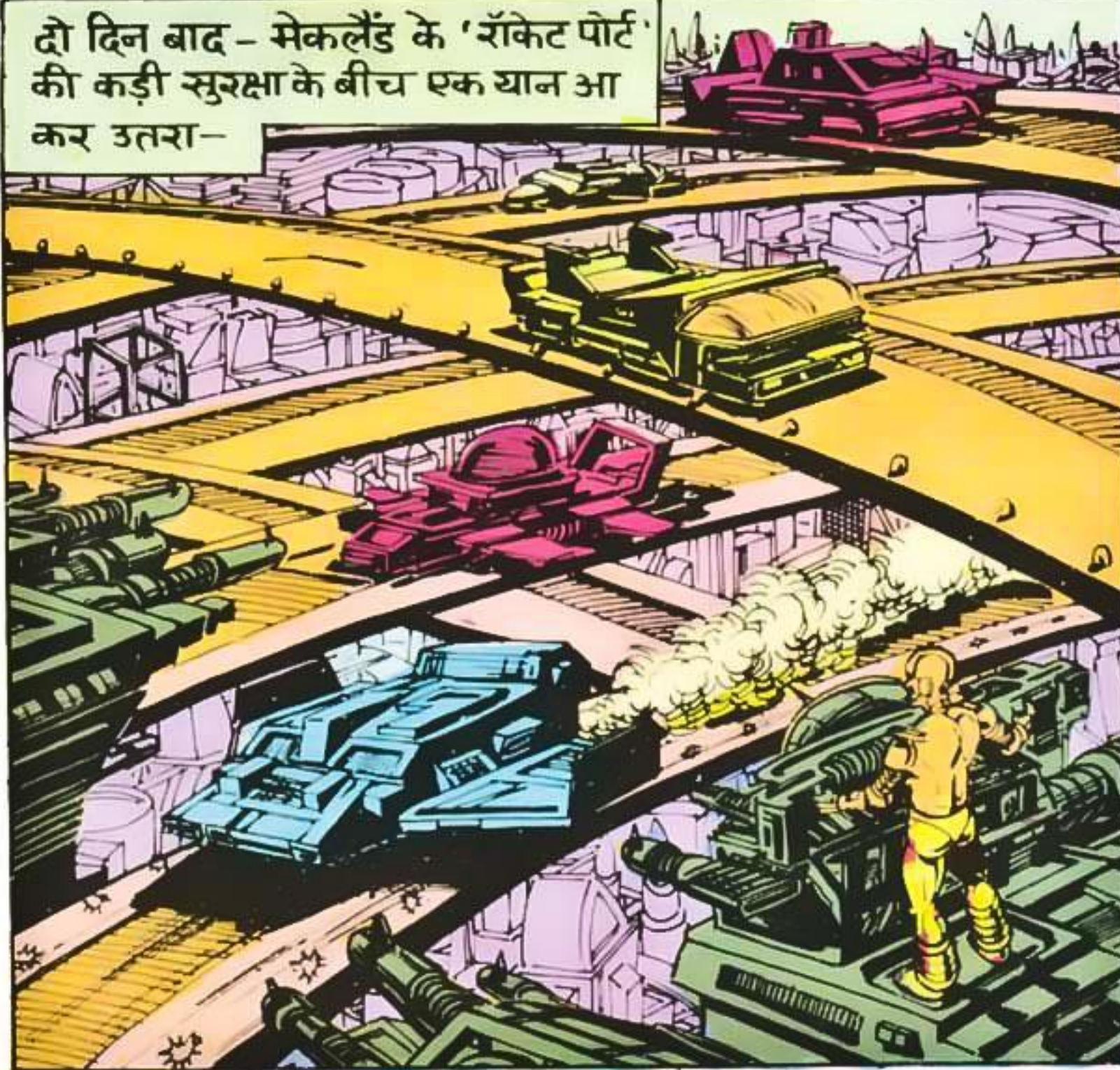
और उसमें से दो मेक-मानव बाहर निकले –
आप मेरे पीछे-पीछे आइए, आदरणीय। इस मेक-अप में हमको कोई पहचान नहीं सकता।
और आप गूंगे बने रहिएगा। सारी बातें मैं करूंगा, क्योंकि मैं यहां के तौर-तरीके जानता हूं।
ठीक है, मिसाटे!

गूं... गूंगूं? गूंऊ!
हाहा! आइए, हमको इस लाइन में आगे बढ़ना है।

एक बार हम 'इंवेस्टिगेशन-काउंटर' पार कर गए, तो हम काफी हद तक सुरक्षित हो जाएंगे।

लेकिन यह काम शायद इतना आसान नहीं था–
तो तुम 'मानवभूमि' से आ रहे हो।
क्यों गए थे वहां पर?
व्यापार के सिलसिले में।

कोई और कारण?
ह..हा! अपने भाई से मिलना भी था। उसकी अभी-अभी...
सुनते ही 'इंवेस्टीगेटिंग ऑफीसर' के चेहरे पर एक भद्दी मुस्कान चमक उठी

और अगले ही पल उस 'मेकमानव' के शरीर के चिथड़े हवा में उड़ रहे थे –
वड़ाम

ले जाओ इसके टुकड़ों को और 'मेक डॉग्स' को पेटभर खिलाओ। मेकलैंड में मानवभूमि का जासूस बनकर आया था।
लेकिन यह भूल गया कि मेकमानवों का कोई भाई नहीं होता।

एक बार मेकमानव बन जाने के बाद सारे रिश्ते खुद ही खत्म हो जाते हैं। क्यों, ठीक कहा न?
बिल्कुल ठीक।
कहां से आ रहे हो? मानवभूमि से?

हां!
क्या काम था वहां पर?
उनसे धातुओं का सौदा करना था। ताकि हमारे महान देश में हथियारों की कोई कमी न रहे।

शाबास! हमेशा अपने महान देश की तरक्की के बारे में सोचते रहो। और तुम?
यह मेरा असिस्टेंट है, ऑफीसर! मानवभूमि में एक एक्सीडेंट में इसकी जीभ कट गई है। अभी यह बोल नहीं सकता।

जल्दी ही आपरेशन करवा के इसको कृत्रिम जीभ लगवा दूंगा।
ऐसा क्या?
अपना मुंह खोलो।

मुंह खोल। गूंगे के साथ-साथ बहरा भी हो गया है क्या?
अब तो इसको जवाब देना ही पड़ेगा।

ध्रुव का जवाब शुरू से ही जरा करारा होता था –

तड़ाक

धमममम

और जब ध्रुव का जवाब खत्म हुआ, तो चारों तरफ सन्नाटा छाया था-
?
बस! आह! मुझे यकीन हो गया कि तुम मेकमानव ही हो।... हाय, मर गया।

इतनी बेरहमी से तो कोई मानव मार ही नहीं सकता।
त..तो हम जाएं?
हां! जल्दी जाओ और इस बेरहम को भी लेते जाओ। हाय!

अब आगे का रास्ता साफ था-
फूऽऽऽह! बाल बाल बचे।
वर्ना मैं तो समझा था कि आज पकड़े गए।
समझ तो मैं भी गया था।

इसीलिए तो उस ऑफीसर को यकीन दिलाना पड़ा कि मैं मेकमानव ही हूं।
आपका तरीका निराला है, आदरणीय! आइए, अब हम जरा विश्राम कर लें।

और लगभग आधे घंटे बाद-
आइए, आदरणीय!
यह किसका घर है?
हमारे पास मेकलैंड में ऐसे कई घर हैं, जहां पर हमारे एजेंट आकर रुकते हैं।
लेकिन हमारे काम के लिए यह घर सब से उपयुक्त है।

क्योंकि यह विटलर के किले के काफी पास है।

देखिए! वह है विटलर का अभेद्य *किला*!

तो अगला काम अब इस किले के अंदर पहुंचना है।

यह एक और असंभव कार्य है। इस किले के भीतर घुसने का सिर्फ एक ही रास्ता है। और वह है...

...कि *विटलर* आपको *खुद* इस किले के अंदर जाने की इजाजत दें।

ऐसा ही होगा, मिसाटे! अगर क्रूर विटलर *क्रूरता* से प्रभावित होता है, तो वह *मुझसे* जरूर प्रभावित होगा।

लेकिन मेरी उससे *मुलाकात* कैसे होगी, मिसाटे?

हमारी जानकारी के मुताबिक कल विटलर की सवारी *मैसेकर स्क्वायर* से गुजरेगी।

तो कल हम विटलर महान का वहीं इंतजार करेंगे।

मैसेकर स्क्वायर पर।

अगले दिन- मैसेकर स्क्वायर पर, विटलर महान की एक झलक पाने को बेताब खड़ी भीड़ में ध्रुव और मिसाटे भी थे –

पीछे! पीछे!!

यह *खिलीट* है, आदरणीय! *विटलर* का सबसे विश्वास-प्राप्त और क्रूर अंगरक्षक।

इसकी *क्रूरता* तो आप खुद ही देख सकते हैं। ...

ध्रुव चुपचाप, भीड़ से एक कदम आगे आ कर खड़ा हो गया –

?

!

पीछे हट, बुढ़िया!

अरे ? सुनाई नहीं देता क्या ? मैं पीछे हटने को बोल रहा हूं, और तू और आगे बढ़ा आ रहा है।
पीछे चल! पीछे।

फिर वही हुआ, जो होना था। धक्का मारने के लिए खिलीट का हाथ ध्रुव की छाती पर आकर रुका –

और अगले ही पल उस का भीमकाय शरीर हवा में उड़ता हुआ, विटलर के सामने आ गिरा–
आह!
पूरा कारवां अपने-आप रुक गया।

खिलीट धीरे-धीरे उठा–
पूरी भीड़ स्तब्ध हो कर ध्रुव की दर्दनाक मौत का इंतजार करने लगी।
शर्म और क्रोध से खिलीट का क्रूर चेहरा चिंगारियां उगलने लगा–

विटलर भी गहरी दिलचस्पी से उस युवा मेक मानव को देख रहा था, जिसने खिलीट को चुनौती देने की हिम्मत की थी–

खिलीट, ध्रुव को दबोचने के लिए उछला–
आाााा..

और एक बार फिर पीठ के बल, जमीन पर आ गिरा–
आह!

ध्रुव हांलाकि सावधान था, लेकिन इस बार बचते-बचते भी लोहे का एक भारी हाथ, हथौड़े की तरह उस के मुंह से आ टकराया–

धाड़

खिलीट की क्रूरता का जवाब, क्रूरता से ही देना ध्रुव के लिए जरूरी था-

इस तरह से पंद्रह मिनट के अंदर किसी की तकदीर बनी, किसी की बिगड़ी और कहीं पर परिस्थितियों ने नया मोड़ लिया—

यह एक इंजेक्शन से पूरे मेकलैंड का इलाज कर देगा!!? इसकी यह बात तो समझ में ही नहीं आती।
लगता है कि हमने इस पर कुछ ज्यादा भरोसा कर लिया है।

हमको इन दोनों पर कड़ी नजर रखनी पड़ेगी। अगर ये जासूस हैं, तो कोई न कोई गलत हरकत जरूर करेंगे।...
...और तब हम इनको रंगे हाथों पकड़ सकेंगे।
हांलाकि ध्रुव इस नए घटनाक्रम से अंजान था, परंतु फिर भी–
मुझे, न जाने क्यों, किसी गड़बड़ का आभास हो रहा है। इसीलिए ज्यादा इंतजार करना ठीक नहीं है।
मुझे तो अबतक यह समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर आप उस प्लेन के यात्रियों को मुक्त कैसे कराएंगे?
उस प्लेन के यात्रियों को मुक्त कराने का सिर्फ एकही उपाय है।...कि विटलर खुद उनको छोड़े जाने का आदेश दे। ये आप ने कहा था।
लेकिन विटलर ऐसा कभी नहीं करेगा। उस पर किसी भी तरह का दबाव बेअसर है।
हम मानवभूमिवाले पिछले कई सालों से यही कोशिश तो कर रहे हैं।
तो फिर देखते जाओ, कि मैं क्या करता हूं। अगर भगवान ने चाहा, तो मैं जरूर कामयाब होऊंगा।
विटलर कितने बजे सोने जाता है?
विटलर कभी नहीं सोता, आदरणीय! क्योंकि उसके मशीनी अंग कभी नहीं थकते।
लेकिन हमारी जानकारी के मुताबिक, वह हर रात बारह से दो बजे तक, अपने कक्ष में अकेले बैठकर व्यक्तिगत काम करता है।
तब तो वही समय मेरे लिए सबसे अच्छा है।
और उसी रात–
..विटलर के पास जाने का सबसे सुरक्षित रास्ता यही है ...
... कि मैं सीधे रास्ते से ही जाऊं।
... छिप कर जाने का अर्थ, अपने आपको जासूस साबित करना ...
रुक जाइए!

आप कहां जा रहे हैं?
ऊपर। महामहिम से मिलने। उनसे मेरा इसी वक्त मिलना बहुत जरूरी है।
क्षमा चाहता हूं, ध्रुव महान! परंतु इस वक्त आप उनसे नहीं मिल सकते।
क्यों?
महामहिम का ऐसा ही आदेश है। वैसे भी, ऊपर जाने के सभी रास्ते बंद हैं। आपको दो घंटे तक इंतजार करना पड़ेगा।
ध्रुव समझ गया कि ज्यादा बहस करना, शक को दावत देना होगा।
वह वापस अपने कमरे की तरफ मुड़ा –
और उस की नजर शीशे में झलक रही दो परछाइयों पर पड़ी –
स्विलीट!… और उसके साथ वह 'इंवेस्टीगेशन-ऑफीसर'!!
क्या हुआ, आदरणीय? आप वापस क्यों….?
अरे, आदरणीय को मारो गोली!
सब गड़बड़ हो गई है। वह 'इंवेस्टीगेशन-अफसर' स्विलीट तक पहुंच गया है।
हे भगवान! अब हमको तुरंत यहां से निकल जाना चाहिए।
नहीं! इस से पहले कि वे कुछ करें, हमको विटलर तक पहुंच जाना चाहिए।
लेकिन कैसे? ऊपर जाने के सभी रास्ते तो बंद हैं।
वह क्या है, मिसाटे?
यह 'एयरकंडीशिनिंग कॉरीडोर' है।
हम लोगों की हर इमारत में 'एयरकंडीशिनिंग-संयंत्र' एक ही स्थान पर लगता है, और उस हवा को इन कॉरीडोरों के जरिए…
..पूरी इमारत में पहुंचाया जाता है। आपके युग में भी ऐसा ही कुछ बचकाने स्तर पर किया जाता था।
जी, हां!
यानि विटलर के कमरे में भी हवा उसी संयंत्र से पहुंचती होगी। और यह कॉरीडोर विटलर के कमरे में भी खुलता होगा।
बहुत अच्छा! यानि विटलर के पास जाने का सबसे अच्छा रास्ता यही है।
इस कॉरीडोर का मुंह भी इतना चौड़ा है, कि इसमें एक आदमी बड़े आराम से घुस सकता है।

यह करना इतना आसान नहीं है, आदरणीय! क्योंकि इस कॉरीडोर में ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां नहीं हैं, और इसकी दीवारें शीशे की तरह चिकनी हैं।
और इसके अंदर का तापमान शून्य से कई डिग्री कम होता है। उस ठंड में, सिर्फ इन कपड़ों में जिन्दा रह पाना भी मुश्किल है।
कोई बात नहीं, मिसाटे! अब मुझे यह खतरा लेना ही पड़ेगा। तुम सिर्फ खिलीट का ध्यान रखना।
मैं काम जल्द से जल्द निपटाने की कोशिश करूंगा!
कुछ ही देर बाद- ध्रुव कॉरीडोर के अंदर था-
बर्रर्रर्र! यहां तो वाकई जान-लेवा ठंड है।
घुसते ही खून जमना शुरू हो गया है।
इस वक्त मुझको श्वेता का वह 'इलेक्ट्रॉनिक यंत्र' याद आ रहा है, जो उत्तरी ध्रुव 'पर भी मुझे गर्म रखे हुए था।
मुझे हर वक्त उसको अपने साथ रखना चाहिए।
वाह! क्या चिकनी और सपाट दीवारें हैं। इस पर से तो शायद छिपकली भी फिसल कर गिर जाएगी।
इस पर तो चढ़ पाने का सिर्फ एक ही रास्ता है।...
... और वह यह कि पीठ दीवार के इस तरफ टिकाई जाए, और पैर दीवार के उस तरफ।
और फिर, घोंघे की चाल से यह तीन सौ फीट की चढ़ाई चढ़ी जाए।
ध्रुव का सर्कस में सधा हुआ बदन, एक-एक इंच करके ऊपर सरकने लगा।
उधर- खिलीट बेसब्र हो रहा था-
वह छोकरा अब बाहर क्यों नहीं आ रहा है? मैं जानता हूं कि वह पकड़े जाने का इंतजार नहीं करेगा।
जरूर अंदर कोई खिचड़ी पक रही है। मेरे साथ आओ।

मिसाटे को जब तक आने वाले खतरे का आभास होता, तब तक देर हो चुकी थी–
त ड़ा क

ओह! तो मेरा शक सही निकला। ये सब 'मेकअप' है। यानि तुम मानवभूमि के जासूस हो।
मिसाटे के सामने अब एक ही रास्ता था।

वह खिलीट की तरफ लपका –
धाड़.
और एक ही वार में धराशायी हो गया।

वह देखिए, खिलीट महान! वह ग्रिल खुली है। वह छोकरा जरूर इसी रास्ते से विटलर महान के पास पहुंचने की कोशिश कर रहा है।
हमको तुरंत महामहिम को सावधान करना चाहिए।
शांत, अफसर, शांत।

महामहिम अपनी रक्षा खुद कर सकते हैं। वैसे भी, हमारी इस बात पर यकीन करके, कोई हमें ऊपर नहीं जाने देगा।
पहले वह छोकरा विटलर को मेरे रास्ते से हटा दे, उसके बाद मैं उसे अपने रास्ते से हटा दूंगा।

ऊपर विटलर रोज की तरह ही व्यस्त था –
लेकिन आज पहली बार उसकी व्यस्तता में बाधा पड़ने वाली थी–
यह क्या...?
यह क्या बदतमीजी है, ड्रुव? इस हरकत का क्या मतलब है?
मतलब नहीं, 'कारण' पूछिए, महामहिम! कारण वह बीसवीं सदी का 'हवाई-जहाज' है ...

... जिसको आप अपहृत करके ले आए हैं। मैं उसे वापस लेने आया हूं।
ओह! तो तुम मानव-भूमि के जासूस हो।
वाकई, काबिल आदमी हो।

क्योंकि तुम से पहले कोई मानव अपनी मौत के इतने पास नहीं पहुंचा था।...

..बल्कि मौत खुद उनके पास आई थी।
आह!
इसके बारे में तो मैं भूल ही गया था।

विटलर के 'मेक-डॉग' ने ध्रुव को संभलने का कोई मौका नहीं दिया-
यह तो बहुत खूंखार है।
अगर जल्दी कुछ न किया, तो ये तो मुझे चबा ही डालेगा।

अब देखना यह है कि इस युग के मशीनी पशु मेरी बोली समझ पाते हैं या नहीं?
गुर्र्र्र्र। वौं..वौंवौं! वाऊऽऽऽ वाऊ!
ध्रुव के गले से एक गुरगुर्राहट उभरी।

और खून पी जाने को बेताब मशीनी कुत्ता रुक गया-
?
वॉऊऊ!
और धीरे से पीछे सरक कर...

..एक कोने में दुबक गया-
आश्चर्य!
आश्चर्य मत करो, विटलर! ये सारे खूंखार पशु मेरे दोस्त हैं। और कम से कम इनको भले-बुरे का अहसास है।
बस, छोकरे! बहुत हुआ। अब मैं तुझे ऐसी मौत मारूंगा, कि पूरी मानवभूमि उससे कांप उठेगी।
विटलर की उंगली से एक किरण निकल कर...

..एक खंभे से टकराई-
और ध्रुव का बदन उड़कर उसमें जा चिपका।
हाहाहाहा!

यह एक अतिशक्तिशाली 'विद्युत-चुंबक' है, लड़के! और यह तुम्हारे धातु के अंगों को तब तक पकड़े रहेगा, जब तक मैं तुम्हारे टुकड़े न कर दूं।

तुम्हारा दिल तोड़ते हुए मुझे दुःख हो रहा है, विटलर! क्योंकि मेरे हेलमेट की तरह ही ये सारे धातु के अंग नकली हैं।
तुम आराम से इनके टुकड़े करते रहना।...
तब तक मैं तुम्हारे बिगड़े दिमाग का इलाज कर दूं।

ध्रुव जानता था कि विटलर को काबू में कर पाने का सिर्फ एक ही तरीका है...
ठक
..कि विटलर को संभलने का कोई भी मौका न दिया जाए।

लेकिन ध्रुव के भीषण वारों का...

..विटलर के मशीनी-शरीर पर कोई असर नहीं हो रहा था-
तड़

जबकि विटलर के एक करारे वार से ही ध्रुव को तारे नजर आ गए-
सड़ाक

और दूसरे से ध्रुव के दिमाग पर हल्का सा अंधेरा छाने लगा-
तड़ाक
तीसरा वार निश्चित ही ध्रुव की जान ले लेता।

मौत कुछ कदम ही दूर थी–
और उस से बचने का रास्ता बहुत दूर था–
लेकिन तभी ध्रुव की नजर किसी चीज पर पड़ी।

और उसके बदन में फुर्ती की एक नई लहर दौड़ गई–
और अगले ही पल–

विटलर का टनों भारी शरीर हवा में उड़ता हुआ-
?

'विद्युत-चुंबकीय' खंभे से जा चिपका–
टन्न्न्न्न्म

इससे पहले कि आश्चर्यचकित विटलर अपनी 'रिमोट-फिंगर' से चुंबक को बंद कर पाता..
...ध्रुव आगे लपका।...

..उसके हाथों ने विटलर के सिर के दोनों तरफ उभरे बटनों को दबाया..
... और विटलर की मशीनी खोपड़ी, ढक्कन की तरह खुल गई।...

..अंदर विटलर का मस्तिष्क साफ नजर आ रहा था...
...ध्रुव ने बिना कोई वक्त गंवाए हारमोन्स का सुपर पावरफुल इंजेक्शन अंदर डाल दिया।...

..सिर का ढक्कन बंद होते ही विटलर का सिर, एक कराह के साथ, एक तरफ ढुलक गया –

और फिर ध्रुव से पूरी कहानी विस्तार से सुनने के बाद –

...तो आपको इस वजह से ऐसा करना पड़ा, आदरणीय! आप के दिए हारमोन्स के इंजेक्शन ने, वाकई मेरे दिल से क्रूरता पूरी तरह खत्म कर दी है।

मैं आज से ही हर मेकमानव के लिए इन 'हारमोन्स-इंजेक्शन' को लेना अनिवार्य कर दूंगा।

और आपके युग के सभी यात्रियों को *सम्मान* सहित विदा करूंगा। आपकी वीरता और महानता के सामने मैं बहुत शर्मिंदा हूं, आदरणीय!

इन सबके लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। आपने जो कुछ भी किया, उसके लिए आपको दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

आपके इस महान कार्य के लिए मैं आपको अपनी एक यादगार देना चाहता हूं, आदरणीय! यह एक मेरी शक्ल का लॉकेट है।

लेकिन जब कभी भी भूले-भटके आप इसको देखेंगे, तो···

मैं बचपन से ही आप का प्रशंसक रहा हूं। हांलाकि आपको साक्षात सामने देखकर मैं आपको तुरंत नहीं पहचान सका।

अब इस पृथ्वी पर *मेकलैंड* नाम की कोई जगह नहीं होगी। सिर्फ *मानवभूमि* रहेगी। पूरी *पृथ्वी* एक होगी, पूरा समाज *एक होगा*।

यहां से वापस अपने युग में जाने के बाद आप को, और प्लेन के यात्रियों को तो कुछ याद नहीं रहेगा।

···इसको देखकर शायद आपको कभी अपने इस *नालायक* वंशज की याद आ जाए।

अपने वंशज!

हां, आदरणीय! मैं आपका ही वंशज हूं।

आज आपने अपने ही बिगड़े बेटे को सुधारा है। *मुझे माफ* कर दीजिए।

ऐसा मौका किसी भी मानव की जिंदगी में पहले कभी नहीं आया था। आखिरकार, कई क्षणों की चुप्पी के बाद ध्रुव बोला –

टप

मैंने तुमको···
माफ किया, विटलर!

और फिर--

इसके बाद क्या हुआ, यह किसी को कुछ याद नहीं–

बात जहां पर खत्म हुई थी, वहीं से फिर शुरू हो गई–

कभी-कभी न ? लेकिन यहां तो रोज...!
क्या हुआ, श्वेता ?
तुम बोलते-बोलते अचानक चुप क्यों हो गई ?

पता नहीं, मम्मी ! लेकिन एक सेकेंड को ऐसा लगा, कि अभी उधर से कोई उड़नतश्तरी उड़ती हुई आएगी।
क्यों नहीं ? और उसमें एक परी बैठी होगी जिसके पीछे राक्षस लगे होंगे। हैं न ? तेरी भी कल्पना का जवाब नहीं, श्वेता !

और कमांडो-हैडक्वार्टर में–
अरे, कैप्टेन, तुम ? क्या बात है ? बड़े थके लग रहे हो ?
हां, करीम !
थकान हो तो रही है। लेकिन मैं तो अभी घर से ही आ रहा हूं। फिर ये थकान क्यों ?

तुम्हारे गले में यह लॉकेट कैसा है ?
लॉकेट !?
यह तुमको कहां से मिला ?
पता नहीं !

लेकिन न जाने क्यों, ऐसा लग रहा है कि मैं इस तरह के व्यक्ति से कहीं मिला हूं।
शायद सपने में ! या फिर... 'स्टार वार्स' फिल्म में ! क्यों ?
ध्रुव के मस्तिष्क की भूलभुलैया में सच्चाई कहीं फंसी हुई थी। लेकिन यह तय था, कि वह जल्दी ही उभरेगी।
समाप्त